डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना, मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–14 मई, 2020)

नयी कविता की विशेषताएं

ऐतिहासिक दृष्टि से 'नयी कविता' भारत की आजादी के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा जाता है, जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भाव बोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये षिल्प विधान का अन्वेषण किया गया। वैसे तो नयी कविता के आरंभ को लेकर विद्वानों में मतभेद है, लेकिन आमतौर पर 'दूसरा सप्तक' के प्रकाषन वर्ष 1951 ई0 से नयी कविता का प्रारंभ माना जाता है। दूसरा सप्तक के प्रायः कवियों ने अपने वक्तव्यों में अपनी कविता को नयी कविता कहा है। नयी कविता मूलतः प्रयोगवाद का विकास है। अज्ञेय नयी कविता आंदोलन के प्रवर्तक माने जाते हैं। 'तीसरा सप्तक' (1959 ई0) का प्रकाषन वर्ष नयी कविता के विकास का उत्कर्ष काल है। नयी कविता के कवियों में आमतौर पर दूसरा और तीसरा सप्तक में संकलित कवियों को माना जाता है। दूसरा सप्तक के कवि हैं– रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेष मेहता, षमषेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, षकुंतला माथुर और हरि नारायण व्यास मुख्य हैं। 'तीसरा सप्तक' के कवियों में कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण षाही, सर्वेष्वर दयाल सक्सेना और मदन वात्स्यायन हैं। अन्य कवियों में मुख्य हैं– श्रीकांत वर्मा, दुष्यंत कुमार, मलयज, सुरेन्द्र तिवारी, धूमिल, लक्ष्मीकांत वर्मा, अषोक वाजपेयी, चन्द्रकान्त देवताले आदि।

नयी कविता की मुख्य विषेषताएं निम्नलिखित हैं–

1. **अस्तित्ववाद** :– नयी कविता के कवियों पर अन्य आधुनिक विचारधाराओं के अलावे अस्तित्ववादी विचारधाराओं का प्रभाव विषेष रूप से पड़ा, जिसके कारण उनकी कविताओं और कुछ उपन्यासों पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है। 'अस्तित्ववाद' एक आधुनिक दर्षन है, जिसमें यह विष्वास किया जाता है कि मनुष्य के अनुभव महत्त्वपूर्ण होते हैं और प्रत्येक कार्य के लिए वह खुद उत्तरदायी होता है। वैयक्तिकता, आत्मसंबद्धता, स्वतंत्रता, अजनबियत, संवेदना, मृत्यु, त्रास, ऊब आदि इसके प्रमुख तत्व हैं, जो नयी कविता में मुख्य रूप से उपस्थित है। अस्तित्ववादी प्रभाव से युक्त एक कविता का चित्र है– 'उड़ चल हारिल, लिये हाथ में/यही अकेला ओछा तिनका/उषा जाग उठी प्राची में/कैसी बाट, भरोसा किनका !'

2. **आधुनिकतावाद** :– नयी कविता के रचनाकारों पर आधुनिकतावाद का व्यापक प्रभाव पड़ा। पहली बार आधुनिकताबोध की उपस्थिति प्रयोगवाद और नयी कविता में देखा जा सकता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक साहित्य और आधुनिकताबोध के जनक अज्ञेय माने जाते हैं। आधुनिकतावाद का संबंध प्रौद्योगिकी और पूँजीवाद के विकास से है। प्रौद्योगिकी और पूँजीवादी विकास के साथ उभरे नये जीवन मूल्यों और नयी जीवन पद्धति को आधुनिकतावाद की संज्ञा दी जाती है। इतिहास और परम्परा से अलगाव, आत्मानुभूति की गहराई, तटस्थता और अप्रतिबद्धता, व्यक्ति स्वातंत्र्य, अपने भीतर की दुनिया में बंद होना आदि इसके मुख्य तत्व हैं। नयी कविता में परंपरा और इतिहास से मुठभेड़ की प्रक्रिया में आधुनिक सौंदर्यबोध, मूल्यबोध, बौद्धिकता तथा व्यक्ति और समाज का द्वन्द्व अटूट रूप में मिलता है। आधुनिकता, अभिव्यक्ति की नवीनता, नयी प्रयोगषीलता, नये सत्य की खोज, नयी

भाषा और नये षिल्प की संरचना बिल्कुल अभिनव रूप में दिखने लगता है। साहित्य में आलोचना को कृति से हटाकर प्रकृति, जीवन, कला तथा साहित्य के विविध रूपों तथा उनके संबंधों को ध्यान में रखते हुए की गयी। एक चित्र है– जीवन कभी सूना न हो/ कुछ मैं कहूं, कुछ तुम कहो/संसार मेरा मीत है/सौंदर्य मेरा गीत है।'

3. <u>कथ्य की व्यापकता</u> :– नयी कविता आंदोलन में एक साथ भिन्न–भिन्न वाद एवं दर्षन से जुड़े रचनाकार षामिल हुए। अज्ञेय आधुनिक भावबोधवादी–अस्तित्ववादी या व्यक्तित्ववादी हैं तो मुक्तिबोध, केदारनाथ सिंह, नागार्जुन आदि मार्क्सवादी–समाजवादी विचारधारा के कवि। भवानी प्रसाद मिश्र यदि गाँधीवादी हैं तो रघुवीर सहाय, सर्वेष्वर दयाल सक्सेना आदि लोहियावादी व समाजवादी हैं। इसके उलट धर्मवीर भारती की रूचि प्रेम सौंदर्य, स्त्री–पुरुष संबंधों में है। नयी कविता के प्रायः कवियों की भिन्न निजी विचारधारा से प्रेरित होने के कारण इसमें कथ्य की व्यापकता स्वाभाविक तौर पर उपस्थित हुआ।

4. <u>अनुभूति की प्रामाणिकता</u> :– अनुभूति की सच्चाई का संबंध चाहे एक क्षण से हो या समूचे काल से, किसी सामान्य व्यक्ति का हो या किसी विषेष पुरुष की, आषा की हो या निराषा की सभी तरह की अनुभूति की प्रामाणिकता कविता के लिए एक महत्त्वपूर्ण मूल्य है। कवि मनुष्य के दुःख–दर्द को पूरी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त करता है। अज्ञेय का एक चित्र है–'चेहरे थे असंख्य/आँखें थीं,/दर्द सभी में था/जीवन का दर्द सभी ने जाना था।'

5. <u>लघुमानववाद</u> :– यदि छायावादी कविता का नायक महामानव था तो प्रगतिवाद का नायक षोषित मानव और नयी कविता का नायक है लघुमानव। लघुमानव के बहाने अदना व्यक्ति से विराट् समाज और आधुनिक विचारों से जुड़ी दुनिया की अभिव्यक्ति नयी कविता की महत्त्वपूर्ण विषेषता है।

6. <u>क्षणवाद का चित्रण</u> :– नयी कविता समय के सबसे छोटे रूप 'क्षण' को सत्य मानती है और उसे जीवन में भोगने का आग्रह करती है। विज्ञान के सबसे लघुत्तम रूप 'ऐटम' की तरह समय का सबसे छोटा और सूक्ष्म रूप क्षण है, जिसकी कल्पना के साथ ही वह लुप्त हो जाता है। घड़ी का एक 'टिक' एक क्षण का रूप है। नयी कविता के कवि इसी क्षण के महत्त्व को प्रतिपादित कर उसे पकड़ कर जीने की कोषिष करते हैं। यह आधुनिक काल के तेजी से बदलते हुए समय और उसके मूल्य को पकड़ने के लिए उद्वेलित करता है। धर्मवीर भारती के 'अंधा युग' का एक चित्र है– 'जब कोई भी मनुष्य/अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को,/उस दिन नक्षत्रों की दिषा बदल जाती है।/नियति नहीं पूर्व निर्धारित/उसको हर क्षण मानव निर्णय बनाता–मिटाता है।'

7. <u>कला पक्ष और शिल्प विधान</u> :– नयी कविता में प्रतीक व बिंब को त्यागकर सपाटबयानी पर बल है। कवि सत्ता व्यवस्था के साथ पारंपरिक भाषा–व्यवस्था को भी तोड़ना चाहता है। वह अनुभव के साथ सपाट, खुरदरी और कठोर भाषा का प्रयोग करता है ताकि यथार्थ को प्रकट किया जा सके। धूमिल की एक कविता का चित्र है– 'न कोई छोटा है न कोई बड़ा है,/मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है,/जो मेरे सामने मुरम्मत के लिए खड़ा है।' इस तरह नयी कविता में लोक भाषा के नये षब्दों, लोकजीवन के नये प्रतीकों, उपमानों और छंदों का प्रयोग कर नये अनुभवों को सरल भाषा, छोटे वाक्यों, सुबोध तथा प्रचलित हिन्दी–अंग्रेजी के षब्दों, मुहावरों और कहावतों में अभिव्यक्त है। भाषा, भाव एवं संगीतात्मकता की दृष्टि से वह लोकगीत के निकट है।

इस प्रकार कुछ कमियों के साथ नयी कविता आधुनिक परंपरा, इतिहास समाज़, मूल्यबोध, बौद्धिक संवेदना तथा व्यक्ति और समाज के द्वन्द्व से अनुप्राणित है।

दिनांक : 14/05/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**